A News Letter of Maitree Jankalyan Samiti | Year-2, Issue-II • January to March, 2007

CHIRPING SPARROW

मैत्री समूह

Title Verification No. : UPENG 03049/24/1/2005-TC

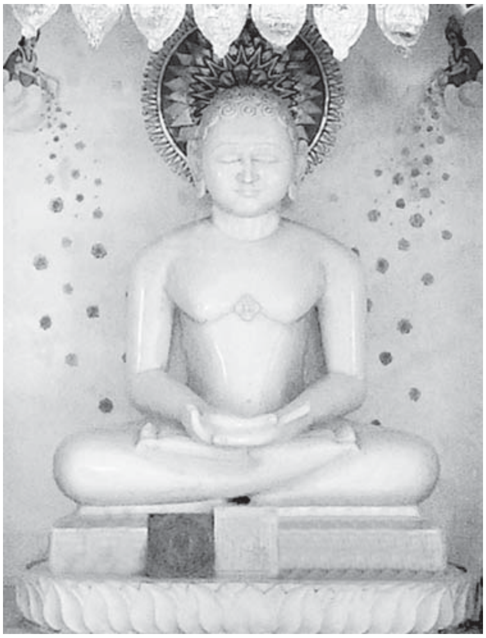

1008 श्री महावीर भगवान
महावीर जयन्ती
31 मार्च, 2007

The Difference

I got up early one morning
and rushed right into the day;
I had so much to accomplish
that I didn't have time to pray.

Problems just tumbled about me,
and heavier came each task.
Why doesn't God help me I wondered.
He answered, You didn't ask.

I wanted to see joy and beauty,
but the day toiled on, gray and bleak;
I wondered why God didn't show me.
He said, But you didn't seek.

I tried to come into God's presence
I used all my keys at the lock.
God gently and lovingly chided
My child, you didn't knock.

I woke up early this morning,
and paused before entering the day;
I had so much to accomplish
that I had to take time to pray.

Grace L. Naessens

Pride of Society

Yogendra Kumar Jain

Date of Birth : 19th April 1945

Place of Birth : Etah (U.P.)

Education : Bachelor of Engineering (Mechanical)

Designation : Dy. Chief Engineer (Rtd.)

Western Railway, Mumbai

Special Achievements :

Received many awards for exemplary performance including the Railway Minister and General Manager's medals. He served the Indian Railways for 33 years on various positions of maintenance, construction and design of the Signal and Telecommunications Departments.

He was a core member of the team that launched the first **"Electronic Train Indication System"**. He was an active member of the team responsible for introducing the first indigenous design of **Electronic Train Axle Counter**. He always cleared his departmental examinations with outstanding grades.

Religious Interest :

Shri Y. K. Jain is the youngest child of Late Shri Khushilal Jain Mukhtiyar and Smt. Kalawati Kunwar.

His father died when he was jsut 2.5 years old.

His mother was responsible for inculcating a strong Jain religious tradition in him.

Y. K. Jain follows a life free from all the vices. He came in contact of Munishri Kshamasagarji in the year 1994.

This association strengthened his religious inclinations and beliefs.

Yogendra ji who was already leading a bachelor's life, assumed "Brahmcharya Vrat" for his lifetime and accepted "Anu Vratas" with the blessings of Munishri to lead a sin free life.

He has a keen interest in reading and teaching Jain religious books.

He is an active member of Maitree Samooh.

It needs to be highlighted that Shri Y. K. Jain took a voluntary retirement from the post of Dy. Chief Engineer of Indian Railways to be able to follow his religious pursuits and spend more time with Munishri.

Young Achievers

Name : Ku. Shivangi Patni

D/o : Shri Paras Patni & Smt. Indra Patni Kota (Rajasthan)

She got 94% marks in XII Commerce CBSE, Kota in 2005. Presently studying in Shree Ram College, Delhi and got 84% marks in B. Com. 1st Year. In 2006, she appeared in C.A. PE-I and established mile-stone by securing First rank in All India.

Name : Ku. Kajal Jain

D/o : Shri Bhanu Prakash & Smt. Snehalata Jain Mansarovar, Jaipur (Rajasthan)

M.Sc. (Statistics) 2002 and got 80% marks from Rajasthan University.

She was selected in Indian Statistical Service (ISS) 2005, with XI position in India & is appointed in Indian Statistical Service.

CHIRPING SPARROW

Year-2, Issue-II

Chirping Sparrow is published quarterly by the Maitree Jankalyan Samiti.

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

E-mail : maitreesamooh@hotmail.com • website : www.maitreesamooh.com

Mobile : 9425132090

वनस्पतियों में तेजोवलय

डॉ. अशोक जैन, ग्वालियर

विश्व के अधिकांश धर्मों में महापुरुषों, अवतारों एवं योगी संत पुरुषों के शरीर के चारों ओर एक कांतिमान ज्योतिपुंज का घेरा दर्शाया जाता है। इस प्रकाशवान घेरे को ही तेजोवलय या आभावलय कहते हैं। भारतीय साहित्य में इसका वर्णन 'प्राण ऊर्जा' के नाम से भी मिलता है जो शरीर के अन्दर उपस्थित रहने के साथ-साथ बाहर भी प्रवाहित होती रहती है। योगी पुरुषों में ध्यान, एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण यह वलय अधिक क्षेत्र लिये हुए होता है जबकि सामान्य एवं भौतिकवादी प्रवृत्ति के मनुष्यों में इसका क्षेत्र अति अल्प होता है। ईसा के 3000 वर्ष पूर्व चीनी सभ्यता के लोग इसे 'ची' के नाम से जानते थे। 'ची' दो ध्रुवों से मिलकर बनती है जिन्हें यिन एवं यांग कहते हैं।

कब्बालाह नामक जिऊ सभ्यता में भी इस प्रकाश ऊर्जा का उल्लेख मिलता है। जॉन व्हाइट ने अपनी पुस्तक 'फ्यूचर ऑफ साइन्स' में विश्व की लगभग 97 ऐसी मानव सभ्यताओं का उल्लेख किया है जो तेजोवलय की उपस्थिति में विश्वास रखते थे।

वैज्ञानिक खोज

समय-समय पर लोगों ने तेजोवलय को देखने एवं अध्ययन करने का प्रयास किया। लगभग 500 ई. पू. पाइथोगोरस ने सर्वप्रथम तेजोवलय को रिकार्ड किया था।

लगभग 12वीं सदी में वोइराक एवं लीवालट ने कहा कि मनुष्यों के चारों ओर का ऊर्जा क्षेत्र एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। 18वीं सदी में रीचेन्वेक ने इस ऊर्जा क्षेत्र का नाम 'ओडिक फील्ड' दिया। उन्होंने कहा कि यह फील्ड मनुष्य के स्वभाव, विचार, वातावरण में परिवर्तन के अनुसार बदलती रहती है।

सन् 1911 में डॉ. किल्नर ने 'मानव ऊर्जा क्षेत्र' के अध्ययन के पश्चात् बताया कि इस क्षेत्र में तीन सतहें होती हैं - बाहरी शरीर से लगी हुई नीली परत, मध्य की भाप जैसी, सबसे बाह्य लगभग 6 इंच मोटी चमकदार परत।

रूस से बायोइन्फोरमेशन इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने इस ऊर्जा क्षेत्र के अध्ययन पश्चात् बताया कि इस क्षेत्र में छोटे-छोटे कण होते हैं जिन्हें 'बायोप्लाज्मा' कहा जाता है। डॉ. हंट ने बताया कि तेजोवलय क्षेत्र में प्रकाश स्पेक्ट्रम के विभिन्न रंगों की एक निश्चित आवृत्ति होती है। इस बायोप्लाज्मा की खोज को ब्रिटेन, जर्मनी, नीदरलैण्ड एवं पोलेण्ड में काफी मान्यता प्रदान की गई। डॉ. हंट के अनुसार तेजोवलय में विभिन्न रंगों की एक निश्चित फ्रीक्वेन्सी होती है। इन प्रयोगों से सिद्ध होता है कि किसी भी शरीर के विभिन्न तंत्रों (पाचन आदि) का सामान्य मॉडल बनाना ही उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता अपितु उसे 'ऊर्जा-क्षेत्रों' के अनुसार बनाना चाहिए। केवल इलेक्ट्रो मेगनेटिक फील्ड ही इस मॉडल की सही व्याख्या नहीं कर सकती। डॉ. हंट के अनुसार शरीर को ऊर्जा के क्वान्टम सिद्धान्त की दृष्टि से देखना चाहिये जिसमें कि कोशिका के परमाणु स्तर से ऊर्जा प्रवाहित हो रही है।

ऊर्जा को देखने के प्रयोग

- सुनहरी धूप में घास पर लेटकर नीले आकाश को देखने से चमकते हुए कण दिखाई देते हैं। इनकी गति तेज होती है।
- प्रदूषण युक्त आकाश में इनकी गति धीमी एवं कम चमकदार होते हैं।
- दोनों हाथों की अँगुलियों को आमने-सामने करने से भी ऊर्जा प्रवाह महसूस किया जा सकता है।
- खुली धूप में पेड़ के पीछे से नीले आकाश को देखने पर पेड़ के अग्रभाग के चारों ओर हल्का हरा रंग दिखाई देगा।
- बसन्त ऋतु में पेड़ों का आरा गुलाबी दिखाई देता है।
- गमले के पौधे पर तेज प्रकाश डालने एवं गहरा काला कपड़ा रखने पर पौधे में से नीला हरा प्रकाश पत्तियों की वृद्धि की दिशा में निकलता दिखाई देगा।
- एक दूसरे की हथेलियों को छूकर ऊर्जा प्रवाह का पता चलता है।
- किरलियान् फोटोग्राफी में किसी पत्ती को आधी काटकर देखने पर कटे हुए भाग का चित्र भी आता है। पूरी पत्ती का तेजोवलय नीला हरा था तथा काटने पर लाल हो गया।

आभा क्षेत्र की सात सतहें

सात वलय एवं शरीर के साथ ऊर्जा चक्रों का आपस में निम्न प्रकार का सम्बन्ध बताया गया है -

- प्रथम वलय एवं चक्र : शरीर की क्रियाविधि अनुभव, शारीरिक कष्ट एवं खुशी आदि से संबंधित है।
- द्वितीय वलय एवं चक्र : मनुष्य की भावुकता से संबंधित है।
- तृतीय वलय एवं चक्र : मानसिक जीवन
- चतुर्थ वलय एवं चक्र : स्नेह, आकर्षण से संबंधित
- पंचम : उच्च इच्छाशक्ति, उच्च विचारों से संबंधित
- छठा : मानव जगत से परे की वस्तुओं के प्रति भी करुणा, दया भाव
- सातवाँ : उच्च विचार, आध्यात्मिक एवं शारीरिक गठन से संबंधित

इस तरह इस तेजोवलय के द्वारा चेतना के आध्यात्मिक विकास को जानना आसान हो जाता है।

इस तेजोवलय का सर्वप्रथम वैज्ञानिक रीति से फोटोग्राफ लेने में सफल होने वाले रूसी वैज्ञानिक एस.डी. किर्लियन हुए, जिनके नाम पर इस फोटोग्राफी पद्धति का नाम 'किर्लियन फोटोग्राफी' पड़ा।

अब तो रोगी मनुष्य के तेजोवलय को देखकर इसका इलाज भी निर्धारित किया जाने लगा है।

वनस्पतियों के संदर्भ में

वनस्पतियों के तेजोवलय के सम्बन्ध में जो विदेशी अध्ययन हुए हैं, उनके कुछ निष्कर्ष इस प्रकार हैं -

- रोगी पौधे की तुलना में स्वस्थ पौधे का तेजोवलय अधिक घना होता है। पत्तियों का तेजोवलय उनकी नाड़ियों में घनीभूत रहता है।
- जीवित पत्तियों से प्रकाश अधिक निकलता है और मृत पत्तियों से कोई प्रकाश नहीं निकलता।
- पत्ती को तोड़ने से पहले उसके तेजोवलय में गाढ़ा आसमानी गुलाबी रंग था जबकि तोड़ने के बाद यह पत्ती के केन्द्र में खूनी लाल रंग के केन्द्र में बदल गया।
- तेजोवलय के आधार पर चिकित्सा करने वाले डॉ. जॉन पिराको ने देखा कि :
  (अ) क्राइसेन्थियम के पौधे से पाँच फुट की दूरी पर तेजी से चिल्लाने पर पौधे का तेजोवलय कम हो जाता है। तेजोवलय का नीला आसमानी रंग समाप्त हो जाता है तथा इसका स्पन्दन एक-तिहाई रह जाता है।
  (ब) चीखने वाले रोगी के करीब (3 फीट की दूरी पर) प्रतिदिन दो घण्टे एक क्राइसेन्यियम पौधे को रखने पर पौधे की निचली पत्तियाँ गिरने लगीं तथा पौधा तीन दिन में मुरझा गया।

आभावलय को जानने के लिये किसी भी एटम के बारे में जानना अत्यन्त आवश्यक है। प्रत्येक एटम में एक नाभिक होता है जिसके चारों ओर कुछ ऑर्बिट होते हैं। यह ऑर्बिट फिर ऑर्बिटल बनाते हैं। इनमें इलेक्ट्रॉन उपस्थित होते हैं। इन इलेक्ट्रॉनों की संख्या अलग-अलग तत्त्वों (मेटल या नॉन-मेटल) में अलग-अलग होती है। जिस तत्व में जितने परमाणु होते हैं उस तत्व की उतनी ही परमाणु संख्या होती है - जैसे कि ऑक्सीजन की 8। सबसे अन्दर के ऑर्बिट में दो इलेक्ट्रॉन होते हैं, इसके बाद अलग-अलग ऑर्बिटल में अलग-अलग संख्या होती है। सामान्यावस्था में यह इलेक्ट्रॉन एक संतुलन बनाकर रहते हैं।

अंदर के दो इलेक्ट्रॉन हमेशा विपरीत दिशा में गति करते हैं। सभी इलेक्ट्रान्स हमेशा स्पन्दन की अवस्था में होते हैं। यदि कोई बाह्य आघात न हो या बाह्य ऊर्जा न मिले तो इलेक्ट्रान अपनी 'ग्राउंड स्टेट ऑफ एनर्जी' में रहते हैं। जब प्रकाश या ऊष्मा या अन्य माध्यम से ऊर्जा प्राप्त होती है तब यह इलेक्ट्रॉन उत्तेजित अवस्था में आ जाते हैं। इन इलेक्ट्रा-ऑबिट्स में ऊर्जा के अनुसार अलग-अलग अवस्थायें होती हैं।

उत्तेजित होने पर यह इलेक्ट्रान ऊर्जा की अधिकता को अपने अगले ऑर्बिट के इलेक्ट्रान को ट्रांसफर कर देता है एवं अपनी ओरिजनल स्टेज में आने का प्रयास करते हैं। यह ऊर्जा दो प्रकार की विधियों से प्रवाहित होती है -

1. ट्रांसफर 2. ट्रांसमिशन

प्रथम प्रकार में ऊर्जा ट्रांसफर होकर बाहर निकल जाती है या उपयोग में लाई जाती है। ट्रांसमिशन प्रकार में ऊर्जा पुनः दो विधियों से बाहर आती है:

(अ) फ्लोरएससन्स : जब ऊर्जा त्वरित गति से बाहर आती है एवं कुछ समय तक प्रकाशित रहने पर फिर अपनी सामान्य अवस्था (ग्राउंड स्टेट) में आ जाती है। उदाहरणार्थ : निऑन बल्ब, मार्कर पेन इत्यादि। ऊर्जा का स्रोत बंद होने पर यह प्रकाश देना बंद कर देते हैं।

(ब) फास्फोरएँससन्स : जब ऊर्जा का प्रवाह धीमी गति से होता है एवं अपनी ग्राउण्ड स्टेट में आने के लिए लम्बा समय लगता है। जितने भी रेडियोधर्मी पदार्थ हैं उनमें यह गुण होता है। ऊर्जा की निरन्तर प्राप्ति न होने पर भी यह प्रकाशमान रहते हैं क्योंकि यह अपनी ऊर्जा को धीरे-धीरे खर्च करते हैं।

वनस्पतियों में क्लोरोफिल नामक अवयव पाया जाता है। यह क्लोरोफिल हरा रंग लिये हुए होता है लेकिन जब इसे प्योर फॉर्म में एक्सट्रेक्ट करते हैं तब इसमें लालिमा दिखाई देती है। वास्तव में हरे पौधे प्रकाश स्पेक्ट्रम में मौजूद हरे रंग को अवशोषित नहीं करते, उसे रिफ्लेक्ट करते हैं जिससे वही रंग हमें दिखाई देता है। अवशोषण तो लाल एवं उससे भी अधिक वेवलेन्थ वाले अदृश्य प्रकाश (इन्फ्रा-रेड) का होता है। जब इस लाल रंग की तरंग लंबाई 660-730 λ तक होती है। तब पौधे अधिक वेवलेन्थ के लाल रंग को अवशोषित कर कम तरंगदैर्घ्य के प्रकाश को बाहर निकालते हैं। जिस पौधे में जितनी अधिक उच्च्च तरंग लंबाई को एब्सार्ब करने की क्षमता होगी वह उतना ही अधिक ऊर्जावान होगा।

साधारण तौर पर पौधे दिन में ऑक्सीजन निकालते हैं एवं रात्रि में कार्बन-डाई-ऑक्साइड। कुछ पौधे ऐसे भी होते हैं जिनमें रात्रि में कार्बन-डाइ-ऑक्साइड अति अल्प मात्रा में निकलती है।

उदाहरण के लिये क्रेसुलेसी कुल के कई पौधों में कार्बन-डाई-ऑक्साइड बाहर न निकलकर कार्बोनिक अम्ल का निर्माण करती है। प्रकाश संश्लेषण के समय यह कार्बन-डाई-ऑक्साइड पुनः उपयोग में लाई जाती है।

चयापचयी क्रिया वाले पौधे दो प्रकार के होते हैं -

1. C_3 - अधिकांश डाइकॉट पौधे
2. C_4 - अधिकांश मोनोकॉट एवं क्रेसुलेसी पौधे

मोनोकोट एवं कैक्टेसी वर्ग के पौधों में फोटो-रेस्पिरेशन होता है क्योंकि इनमें दो एन्जाइम्स होते हैं। वैसे देखा जाये तो कार्बोनिक अम्ल का संचय होना एक प्रकार से विषेले पदार्थ का संचय होना ही है। इसीलिए इन पौधों का तेजोवलय कम होता है एवं पूज्य नहीं माने जाते हैं।

अधिकांश क्लोरोफिल के धनी पौधों में धार्मिक पौधों का तेजोवलय अधिक होता है।

तुलसी : वाष्पशील सुगंधित तेल होने से यह पर्यावरण को शुद्ध करता है एवं इसकी वेवलेन्थ का ऐम्प्लीट्यूड से सामंजस्य करता है हालाँकि इसमें क्लोरोफिल कम होता है।

पीपल, बरगद : क्लोरोफिल की अधिकता होने से तेजोवलय अधिक होता है।

नीम : कड़वा होने के बावजूद भी वायुशोधक होने से तेजोवलय ज्यादा होता है।

आँवला : विटामिन-सी एवं विटामिन-ई की अधिकता होने से यह मनुष्य पर शीतल प्रभाव पैदा करता है।

क्राइसेन्थियम् : इसकी सुगंध मनुष्य को आकर्षित करती है।

कुछ पौधों में क्लोरोफिल की अधिकता होने पर भी तेजोवलय कम होता है। उदाहरणार्थ :

नागमल्लि : एक विशाल छायादार वृक्ष होता है। बड़े-बड़े रंगीन फूलों से सुसज्जित रहता है परन्तु इसके पेड़ से दुर्गन्ध आती रहती है। इसको परागित करने के लिए भी सुन्दर तितलियाँ या भँवरे नहीं आते अपितु चमगादड़ों से परागित होता है।

अकेशिया : रेमझा, बबूल, धैंकुर आदि में भी तेजोवलय की अल्पता है।

अधिकतर धार्मिक पौधे C-3 पौधे होते हैं। ये पौधे दीर्घायु भी होते हैं।

कोलाहल से तेजोवलय में कमी आना या अव्यवस्थित होना : अधिक कोलाहलपूर्ण या कर्ण अप्रिय ध्वनि तरंग का एम्प्लीट्यूड डिस्टर्ब हो जाता है जिससे ध्वनि ऊर्जा प्रदूषण बढ़ता है। जब यह इर-रैगुलर वेवलेन्थ पौधे की वेवलेन्थ के सम्पर्क में आती है तो पौधे की वेवलेन्थ भी गड़बड़ हो जाती है एवं पौधा मुरझाने लगता है क्योंकि ध्वनि प्रदूषण से इलेक्ट्रॉन्स का स्पंदन गड़बड़ा जाता है। इसे इस प्रकार समझा जा सकता है जैसे किसी कर्ण-प्रिय आवाज में हम अपने को ज्यादा स्फूर्तिदायक समझते हैं।

बीमार पौधे पीले या लाल रंग के दिखने लगते हैं। इसका मतलब यह है कि वह पौधा पीले या लाल प्रकाश (जिनकी वेवलेन्थ ज्यादा होती है।) को ग्रहण नहीं कर पा रहा है एवं परावर्तित कर देता है। हरे पौधे हरे प्रकाश को ही परावर्तित करते हैं। जितना अधिक वेवलेन्थ के प्रकाश को अवशोषित करेगा उतना ही अधिक 'औरा' होगा।

तेजोवलय का क्षेत्र : यदि किसी पौधे के मैगनेटिक स्पेक्ट्रम के आसपास का वातावरण अनुकूल है तो पौधे का एम्प्लीट्यूड (पीक्स एंड ट्रफ्स) उस वातावरण के एम्प्लीट्यूड से सामंजस्य कर जाता है जिससे उनका एम्प्लीट्यूड दुगुना हो जाता है।

अस्थायी तेजोवलय : जब संगृहीत ऊर्जा अधिक समय के लिए इकट्ठी नहीं रह पाती है अर्थात् फॉस्फोरएससन्स न होकर क्लोरएससन्स की क्रिया अधिक होती है - तब 'औरा' स्थायी या लंबी अवधि का नहीं होता है। इसलिए साधकों का 'औरा' अधिक स्टेबल एवं इफेक्टिव होता है, जबकि ढोंगी प्रकृति के व्यक्तियों में अस्थायी 'औरा' होता है। तेजोवलय की परिधि एवं अवधि आंतरिक स्थिति पर ज्यादा निर्भर करती है।

कुछ वनस्पतियाँ ऐसी भी होती हैं जिनका तेजोवलय कम या नगण्य होता है। यह वनस्पतियाँ भी अनुपयोगी होती हैं। इनमें औषधीय या अन्य गुणों का भी अभाव होता है। उदाहरणार्थ - पारथीनियम, लेन्टाना, विलायती बबूल, पारकिन्सोनिया आदि।

तेजोवलय का संबंध वनस्पतियों की लेश्याओं से भी स्थापित किया जा सकता है। जैसे कि अफ्रीका के मांसाहारी पौधे कृष्णलेश्या युक्त हैं। कीटभक्षी पौधे कलश पादप आदि नील लेश्या युक्त एवं कँटीले नागफीन एवं अन्य कैक्टस जाति के पौधे कापोत लेश्या युक्त होते हैं। इन पौधों में भी तेजोवलय अधिक प्रभावी नहीं होती है।

वनस्पतियों में तेजोवलय के विस्तृत एवं वैज्ञानिक अध्ययन की महती आवश्यकता है। नीचे दी गई तालिका में बताया गया है कि रत्नों की जगह जड़ी-बूटियों को भी उपयोग में लाया जा सकता है। इन रत्नों के समान ही इन जड़ी-बूटियों का आभा वलय होता है।

जड़ों का प्रभाव रत्नों जैसा

रत्न	जड़
नीलम	विछुआ, चन्दन
हीरा	एरंड, अनार
मूँगा	अनन्तमूल, नागफनी
पन्ना	विधारा
पुखराज	शुद्ध हल्दी, केला
मोती	खिरनी
माणिक्य	बेल
गोमेद	लाल चंदन
लहसूनिया	लौंग का फूल

ग्रह शान्ति हेतु स्नान में प्रायः प्रयोग की जाने वाली वनस्पतियाँ निम्न हैं -

ग्रह	वनस्पति
रवि	छुईमुई
चन्द्र	सौंठ
मंगल	चित्रक मूल
बुध	राहुला
गुरु	नागरमोथा
शुक्र	सिरिष
शनि	हल्दी
राहू	सुआपंख
केतु	लोध्र

Q. पूजा करते समय सफेद कपड़े क्यों धारण करते हैं? अभिषेक बम्बोरिया, नीमच

A. कोई भी धार्मिक अनुष्ठान करते समय हम वस्त्रों का ध्यान रखते हैं। वस्त्रों का हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है। अगर एकदम चुस्त कपड़े पहनते हैं तो हमारे भीतर किसी भी काम को करने की फुर्ती आ जाती है। और यदि ढीले-ढाले कपड़े पहनते हैं तो मन में आराम का भाव आ जाता है। रंगों का भी प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है। जैन धर्म में छः लेश्याएँ (हमारी भाव दशा) कही गई हैं। जिसमें से कृष्ण, नील, कापोत, तीन लेश्याएँ अशुभ मानी गई हैं और पीत, पद्म और शुक्ल, तीन शुभ लेश्याएँ मानी गई हैं। हम अशुभ लेश्या के प्रतीक काले, नीले, स्लेटी रंग के वस्त्र धार्मिक अनुष्ठान में धारण नहीं करते हैं, बल्कि शुभ लेश्या के प्रतीक पीले, नारंगी या श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। यही कारण है कि पूजा करते समय पीले या श्वेत वस्त्र धारण करने का विधान है।

Q. In our country poor people do not get even meals two times a day. Is it correct to make a Jain temple costing 2 crores. Should that not be sprnt in doing something for poor destitudes.

- Sneha Kasal, Lalitpur

A. जैन धर्म में मंदिर का निर्माण आत्मशांति पाने के लिए किया जाता है इसलिए यह आत्मशांति पाने के लिए आवश्यक है। लेकिन जहाँ पर पहले से ही एक मंदिर हो वहाँ पर दूसरे मंदिर का निर्माण अपनी मान-कषाय की पुष्टि के लिए आवश्यक नहीं है। एक कॉलोनी में एक जैन मंदिर का निर्माण करना उचित है। लेकिन मंदिर भी साधारण रूप में ही बनाने चाहिए, ज्यादा तामझाम और पैसे का अपव्यय ठीक नहीं है। गरीब निर्धनों की सेवा करना भी हमारा धर्म है, उसका भी यथाशक्ति उचित ध्यान रखना चाहिए। अगर मंदिर निर्माण में 2 करोड़ रुपये की राशि व्यय की गई है तो उसका कम से कम 10 प्रतिशत का व्यय निर्धनों की सहायता के लिए करना चाहिए। निर्धन भी व्यसनी न हो, तभी उनकी मदद करना चाहिए। मंदिर निर्माण आत्म-कल्याण के लिए आवश्यक है और गरीबों की सहायता करना पर-कल्याण का कार्य है। दोनों के बीच संतुलन रखना चाहिए।

Q. जीवन में एक अच्छा व्यक्ति बनना यह धर्म है या धर्म की शुरूआत है। यदि हमारे भीतर स्वयं भगवान है तो मंदिर क्यों?

सचिन जैन, कोलारस

A. जीवन में अच्छा व्यक्ति बनना धर्म की शुरूआत है। जीवन अच्छा बनाना धर्म के लिए आवश्यक है। अच्छा इंसान ही भगवान बनने की साधना कर सकता है। इसलिए अच्छा इंसान बनने का प्रयत्न हमेशा करना चाहिए।

जिन दर्शन का महत्व है कि जिनदर्शन से निजदर्शन होता है। मंदिर में विराजे भगवान को देखकर हम अपने अंतरंग में भगवान बनने की क्षमता का विकास करते हैं जब तक हमारा जीवन भगवान के समान पवित्र नहीं होता है तब तक हमें जिनदर्शन करना अनिवार्य है।

Q. जिनबिम्ब के समक्ष द्रव्य चढ़ाने का क्या ध्येय है। जिनबिम्ब के दर्शन करते समय क्या भाव रखना चाहिए। अनुभा जैन, देवरी

A. जिनबिम्ब के समक्ष अष्टद्रव्य चढ़ाने का उद्देश्य आचार्यों ने हमें बताया है। हम उससे लाभ ले सकते हैं। अगर सामान्य रूप से दर्शन के समय चावल अर्पित करते हैं तो चावल प्रतीक है कि चावल धान से छिलका हटाने पर प्राप्त होते हैं। हमारा जीवन भी इसी तरह उज्ज्वल, अखंड और आवरण से रहित हो सके। हम जनम-मरण से मुक्त हो जायें। दर्शन करते समय प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव गुणवानों के प्रति हर्ष भाव दीन- दुखीजनों के प्रति दया का भाव और धर्म से विपरीत चलने वालों के प्रति साम्य भाव रखना चाहिए। भगवान के दर्शन करते समय भगवान के समान बनने का और कर्मों और संसार के बंधक से मुक्त होने का भाव रखना चाहिए।

सर्वप्रथम हम भगवान के श्रीचरणों में जल अर्पित करते हैं। जल को ज्ञान का प्रतीक माना गया है। सम्यग्ज्ञान के अभाव में जीव संसार में जन्म-मरण की पीड़ा पाता है। अतः जल अर्पित करना सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति और जन्म-मरण की पीड़ा से मुक्त होने की भावना का सूचक है। जल से एक व्यवहारिक संदेश यह भी मिलता है कि हम सभी जीवों के साथ मिलजुलकर रहना सीखें। जल की तरह तरल, निर्मल और गतिशील बनें।

जल के उपरान्त चंदन अर्पित करने का अवसर आता है। चन्दन शीतलता का प्रतीक है। शीतलनाथ भगवान की स्तुति करते हुए आचार्य समंतभद्र स्वामी कहते हैं कि हे भगवन्! संसार में चंदन, चाँदनी, गंगा का शीतल जल, मणिमय हार आदि शीतलता प्रदान करने वाले माने गए हैं पर वास्तव में आपके निर्दोष पापरहित वचन ही शीतल हैं जो जीव को संसार के संताप से सदा के लिए मुक्त करने वाले हैं। अतः चंदन अर्पित करने का पवित्र उद्देश्य यही होना चाहिए कि हमें भगवान की वाणी का समागम मिले जिससे हमारी श्रद्धा की आँख खुले, हमें आत्मदर्शन (स्वसंवेदन) हो और हम दर्शनावरणीय-कर्म को नष्ट करके संसार परिभ्रमण के संताप को शान्त कर सकें। चन्दन चढ़ाने से एक व्यवहारिक संदेश यह भी मिलता है कि हम शोक-संतप्त दुःखी जीवों को अपने तन-मन और वाणी के द्वारा शीतलता पहुँचाने का प्रयत्न करें। सभी के प्रति हार्दिक और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार बनाए रखें।

अब क्रम आता है अक्षत चढ़ाने का। अक्षत को अखण्डता (indivisibility) का प्रतीक माना गया है। हम अक्षत अर्पित करके अखण्ड या अव्याबाध-सुख पाने की भावना व्यक्त करते हैं। यह अव्याबाध-सुख हमें वेदनीय कर्म के अभाव में प्राप्त हो सकता है इसलिए अक्षत अर्पित करने का मंगल उद्देश्य वेदनीय कर्म जनित सांसारिक सुख-दुःख में समता रखते हुए जीवन जीना भी है। सामान्यतः धुले हुए स्वच्छ और अखण्ड चावलों में अक्षत की कल्पना करके हम उन्हें भगवान के सम्मुख चढ़ाते हैं। अतः चावल की स्वच्छता या उज्ज्वलता भी हमें एक व्यावहारिक संदेश देती है कि हम अपने जीवन को साफ-सुथरा और उज्ज्वल बनाएँ। सुख-दुःख के अवसर आने पर मन को अहंकार और संक्लेश से मलिन न होने दें।

अक्षत के उपरान्त पुष्प अर्पित किए जाते हैं। पुष्प को काम-वासना का प्रतीक माना जाता है। काम-वासना मोहजनित है। अतः पुष्प समर्पित करके हम मोहजनित काम-वासना को शांत करने और अपने शील या स्वभाव को पाने की भावना व्यक्त करते हैं। पुष्प अर्पित करते समय एक व्यावहारिक सन्देश यह भी ले सकते हैं कि हमारा जीवन फूलों की तरह कोमल, सुन्दर और सुगंधित बने। फूलों का जीवन अत्यन्त अल्प होता है फिर उन्हें मुरझाना और टूटकर गिर जाना होता है। इसी तरह हमारा जीवन भी थोड़ा है यदि हम इसका सदुपयोग नहीं कर पाएँगे तो एक दिन यह समाप्त हो जाएगा। जीवन की सार्थकता यही है कि हम जीवन को आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण के कार्य में लगाए।

अब नैवेद्य अर्पित करने का क्रम आता है। निर्दोष भोज्य-सामग्री को नैवेद्य कहते हैं। इसे चरु भी कहते हैं। भूख-प्यास की वेदना को शान्त करने और आयु-प्राण को संबल देने में भोज्य-सामग्री मदद देती है। जीव जब तक किसी भी भव की आयु धारण करता रहेगा तब तक भूख-प्यास आदि की वेदना से मुक्त नहीं हो सकता। अतः हम नैवेद्य अर्पित करते समय आयु-कर्म से मुक्त होने और भूख (क्षुधा) की वेदना मिटाने की भावना व्यक्त करते हैं। नैवेद्य अर्पित करते समय एक व्यावहरिक सन्देश यह भी लेना चहिए कि यथाशक्ति आहार-दान देकर आहार-सामग्री के प्रति अपनी आसक्ति घटाने, सभी जीवों का उपकार करने और आत्म-तृप्ति पाने का सद्प्रयास करते रहना चाहिए। जैसे आयुकर्म के अभाव में आत्मा में अवगाहनत्व गुण प्रकट हो जाता है इसी प्रकार आहार-दान के निमित्त से प्राणिमात्र को अपने हृदय में स्थान देते हुए सभी के हृदय में अपने लिए स्थान प्राप्त किया जा सकता है।

अब दीप अर्पित करने का अवसर आता है। दीपक की ज्योति अन्धकार को नष्ट करने वाली और सभी पदार्थों को प्रकाशित करने वाली है। इस ज्योति से भी सूक्ष्म केवलज्ञान रूपी परम ज्योति है जो सभी आत्माओं में व्याप्त अज्ञान के सघन अंधकार को हटाने वाली और शरीरातीत शुद्ध आत्मस्वरूप का दर्शन कराने वाली है। अतः दीप समर्पित करते हुए हम नामकर्म के अभाव में प्रकट होने वाली शरीरातीत विशुद्ध परमात्म-ज्योति को प्राप्त करने की मंगल-भावना व्यक्त करें। दीपक से एक व्यावहारिक सन्देश यह भी लिया जा सकता है कि हम जहाँ भी रहें वहाँ अपने आसपास के परिवेश को सदाचार और सद्ज्ञान से आलोकित करते रहें। हमारे शरीर रूपी दीपक में सभी जीवों के प्रति स्नेह (तेल) सदा बना रहे और श्रद्धा-भक्ति व विवेक की बाती निरन्तर जलती रहे।

अब धूप अर्पित करने का क्रम आता है। धूप की यह विशेषता है कि वह स्वयं जलती जाती है लेकिन आसपास के समूचे वातावरण में फैलकर उसे सुगंधित बना देती है। धूप की खुशबू गरीब-अमीर, छोटे-बड़े आदि का भेदभाव नहीं करती और समान-भाव से सभी को लाभान्वित करती है। अतः धूप अर्पित करते हुए हम गोत्र कर्म के अभाव में प्रकट होने वाले आत्मा के स्वाभाविक अगुरुलघुत्व गुण को प्राप्त करने की भावना व्यक्त करें। धूप से एक व्यावहारिक सन्देश यह भी लेने का प्रयत्न करें कि अपने जीवन में किसी के प्रति भेदभाव नहीं रखेंगे और सभी से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करेंगे।

अब फल समर्पित करने का क्रम आता है। हम संसार में जो भी भला-बुरा कार्य करते हैं तो उसका भला-बुरा फल भी हम पाते हैं। फल की प्राप्ति में हमारे संचित कर्म या संस्कार बाधक भी बनते हैं। ऐसी स्थिति में हम फल समर्पित करते हुए यह भावना रखें कि हमारे बाधक कर्मों (अन्तराय कर्म) का अभाव हो ताकि हम अपनी अनन्त सामर्थ्य या अनंत बल को प्रकट करके मनुष्य जीवन का श्रेष्ठतम फल मोक्षपद पा सकें। फल चढ़ाते समय यह व्यावहारिक संदेश भी मिलता है कि हम जो भी करें अच्छा करें और अच्छी भावना से करें। शुभ-अशुभ कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय में साम्य-भाव रखें।

अन्त में अर्घ समर्पित करने का अवसर आता है। अर्घ वास्तव में अष्ट-द्रव्य से पृथक् नहीं है वह अष्ट-द्रव्यों का समन्वित रूप है। अर्घ्य के मायने है मूल्यवान। अष्ट द्रव्यों को जब हम शुभ-भावों के रस में मिलाकर अर्घ्य बनाते हैं तब हम सचमुच मूल्यवान हो जाते हैं। अर्घ्य समर्पित करते हुए हम यह भावना व्यक्त करते हैं कि हमें आत्मा की परम विशुद्ध और अमूल्य परमात्म-अवस्था प्राप्त हो। अर्घ्य चढ़ाते समय एक व्यावहारिक संदेश यह भी ले सकते हैं कि मनुष्य जीवन सबसे मूल्यवान है, हमें इसका सदुपयोग करना चाहिए। स्वयं आत्म-निर्भर रहकर सबकी मदद के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

वर्तमान समय में पूजा की प्रक्रिया, पूजा के दौरान समर्पित की जाने वाली सचित्त-अचित्त पूजन-सामग्री, अभिषेक या प्रक्षाल की क्रिया, आह्वान, स्थापन, विसर्जन या समापन आदि क्रियाओं में विविधता देखने में आती है। इस विविधता को देखकर हम विचलित न हों। अहिंसा और वीतरागता को प्रमुखता देते हुए कषायों की मंदता, कर्मों की निर्जरा और रत्नत्रय की प्राप्ति की भावना से प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक अभिषेक और पूजा करने का सम्यक्-पुरुषार्थ करें और अपना जीवन सफल बनाएँ।

Q. बहुत-सी जीर्ण-शीर्ण किताबें भगवान के लिखे पेज वगैरह जलाकर उनकी राख कुएँ में डालना उचित है या अनुचित?

प्रज्योत दिपा जैन, कारंजा

A. धर्म से संबंधित मूर्ति, ग्रंथ, पोस्टर आदि को अविनय से बचाने के लिए उनके खंडित या जीर्ण-शीर्ण हो जाने पर दो उपाय बताये गये हैं। या तो उन्हें गहरे जल में विसर्जित कर दिया जाये या अग्नि में मंत्र पढ़कर समर्पित कर दिया जाये और जली हुई राख को जल में विसर्जित कर दिया जाये। अतः जीर्ण-शीर्ण किताबों एवं पोस्टर को जलाकर उनकी राख कुएँ में विसर्जित करना उचित ही है।

Q. अरिहन्त परमेष्ठी और जिनबिम्ब में क्या अंतर है। मंदिर में जिन मूर्ति का हम दर्शन करते हैं। वे अरिहन्त परमेष्ठी हैं या जिनबिम्ब।

गगन जैन, पाली

A. जैन धर्म में जिनबिम्ब दो प्रकार के कहे गये हैं। अष्ट प्रतिहार्य और चिन्ह से युक्त अरिहन्त परमेष्ठी की प्रतिमा एवं चिन्ह और अष्ठ प्रतिहार्य से रहित सिद्ध भगवान की प्रतिमा। मंदिर में जो दोनों प्रकार के जिनबिम्ब पाये जाते हैं जिनकी पूजा-आराधना हम करते हैं। विशेष रूप से मंदिर में जिनबिम्ब अरिहन्त परमेष्ठी के रूप में विराजमान हैं, जिनकी प्रतिष्ठा पंचकल्याणक के द्वारा होती है।

सद्भाव

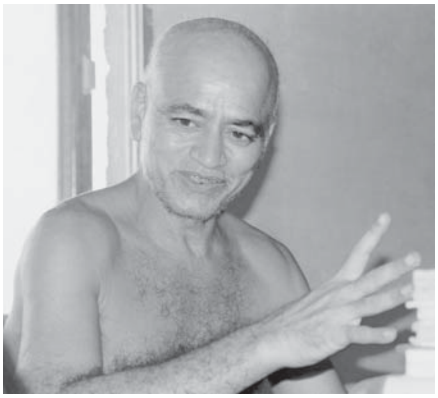

पंचकल्याणक पूरे हुए। गजरथ की प्रदक्षिणा होनी थी। दो-तीन लाख लोग क्षेत्र पर उपस्थित हुए थे। यह सब आचार्य महाराज के पुण्य-प्रताप का फल था। देखते ही देखते यथासमय गजरथ की फेरी सम्पन्न हो गई और महाराज संघ सहित प्रतिष्ठा मंच पर विराज गए।

आशीर्वचन सुनने का सभी का मन था। इसी बीच कई लोगों ने एक साथ आकर अत्यन्त हर्ष-विभोर होकर कहा कि ''आज जो भी हुआ, वह अद्भुत हुआ है, उसे आपका आशीर्वाद और चमत्कार ही मानना चाहिए। आज के दिन इतने कम साधनों के बावजूद भी लाखों लोगों के लिए पानी की पूर्ति कर पाना संभव नहीं था। हम सभी व्यवस्था करके हताश हो गए थे, पर जैसे ही गजरथ की फेरी प्रारम्भ हुई, गजरथ स्थल के समीप बहुत दिन से बंद पड़े एक हैण्डपम्प में अनायास पानी निकलने की सूचना मिली। सभी लोगों ने पूरी फेरी होने तक पानी पिया, इस तरह आपके आशिष व कृपा से यह समस्या हल हो गई। चमत्कार हो गया।''

आचार्य महाराज ने बड़ी शान्ति से सारी बात सुनी, फिर अत्यन्त निर्लिप्त होकर कहा कि ''भैया। धर्म की प्रभावना तो चतुर्विध संघ के द्वारा इस पंचमकाल में निरन्तर होती रहेगी, इसमें हमारा क्या है? जहाँ हजारों-लाखों लोगों की सद्भावनाएँ जुड़ती हैं वहाँ कठिन से कठिन काम भी आसान हो जाते हैं। भव्य-जीव इस पावन क्षेत्र पर आकर प्यासे कैसे लौट सकते हैं, सभी की प्यास बुझे - ऐसी परस्पर सद्भावना ही आज के इस कार्य में सफलता का कारण बनी है, हम तो निमित्त मात्र हैं।''

सुनकर सभी दंग रह गए। स्वयं को ख्याति, पूजा, लाभ से बचाए रखने वाले ऐसे निस्पृही आचार्य का समागम मिलना हमारा/सभी का सौभाग्य ही है।

नैनागिरि (1987) - आत्मान्वेषी

सूचना

1. यंग जैना अवार्ड 2007 के लिए कक्षा 10th, 12th तथा Senior के Form बच्चों को उपलब्ध कराने में आप हमारी मदद करना चाहे तो हमसे सम्पर्क करें। Form और Poster निम्न पते से मँगा लें।
2. हमसे पत्राचार करते समय अपना रजिस्ट्रेशन नं. जरूर लिखें।
3. आपका पता बदलने पर तत्काल उसकी सूचना हमें दें।

पता :
Maitree Samooh
1/205, Professor Colony
Agra-282 002

सफेद पर सफेद

- मुनि क्षमासागर

मैंने कई बार
उससे कहा
कि सफेद पर सफेद से
मत लिखा करे,
इस तरह लिखना
कहाँ दिखता है?
उसका कहना है कि
सवाल लिखने का है
दिखने का खयाल
एकदम झूठा है,
और सफेद पर
काला लिखना
ठीक भी नहीं लगता,
सफेद पर तो
सफेद ही लिखा जाता है,
तब कितना भी लिखो -
कागज
सफेद ही रहता है।

- मुक्ति से साभार

White on White

- Translated by ***Sunita Jain***

I told him many a times
to not write on white paper
with white ink.
'Who would read it
if you write like this?'

He said, 'What matters is that
you write.
It matters not
if no one can see it.

In any case, to write
black on white
seems like impropriety.

White demands white
Then no matter how much you
write,
the surface
remains white.'

Deceit/Honesty

Honesty means always speaking the truth. Honesty means not taking things that do not belong to us. Some people lie, cheat or steal to get away from difficult situations or people. When people do that and are caught they feel ashamed. If they are not caught they are always scared of being found out and they feel guilty. For example, you go to school without doing your homework and the teacher asks you if it is done. If you lie you are worried about what will happen if the teacher finds out. There is a feeling of shame and sadness in dishonesty. Instead, if you are honest and you admit it is not done, the teacher may get angry and upset, but would be happy to see that you are a honest person. You can apologize and do your homework the next day.

Being honest is being truthful in thoughts, words and deeds. You have to have good thoughts, to say what you think and to do what you say. When thoughts, words and deeds become one, a person's character becomes strong and unshakable. To live a life of truth:

1. We should make sure our thoughts are good. Always have good and happy thoughts. Forgive the faults of others and remember that no one is perfect, including us. Give other persons the benefit of doubt.

2. Say what you think. Never think one thing and say something else. Nevertheless, while speaking the truth, always remember to say it in a polite manner without hurting anyone. Prefer to remain quiet, if your speech, though honest, may hurt others

3. Do what you say. Keep your word. Keep your promises. If you say you will do something, even if it is a small thing, you should do it. You should be the same in your thoughts and your actions. If you are transparent like that you will be happy and at peace.

A person who speaks the truth is trusted and loved by others. Everyone likes to make friendship with a truthful person. However, a person who lies slowly loses all his friends because nobody likes or trusts a person who tells things that are not true.

Truth is simple. When we lie, we have to worry about covering up one lie with another. Being honest is saying it just the way it is. It is so simple.

Honesty and truthfulness give us strength and peace. Deceit creates weakness and fear. Telling a lie weakens the mind because each time we lie we get an uneasy, sick feeling within us. When the truth is spoken the conscience and the mind are together. They are in unison. That makes us strong and peaceful within.

The first set of values for not to crumble under the pressures and demands of life are honesty and truthfulness. When we lay a strong foundation for inner growth, we can withstand the temptations and compromises surrounding us. Truth is a means to inner strength, peace and the trust and love of others.

Having a conscience
Only say the truth
Never tell a lie
Even when no one is watching
Say what you think
Think about what is right.

Did you know?
Mahävir-Swämi taught us to live a transparent life, with no discrepancy between our thoughts, words and actions!

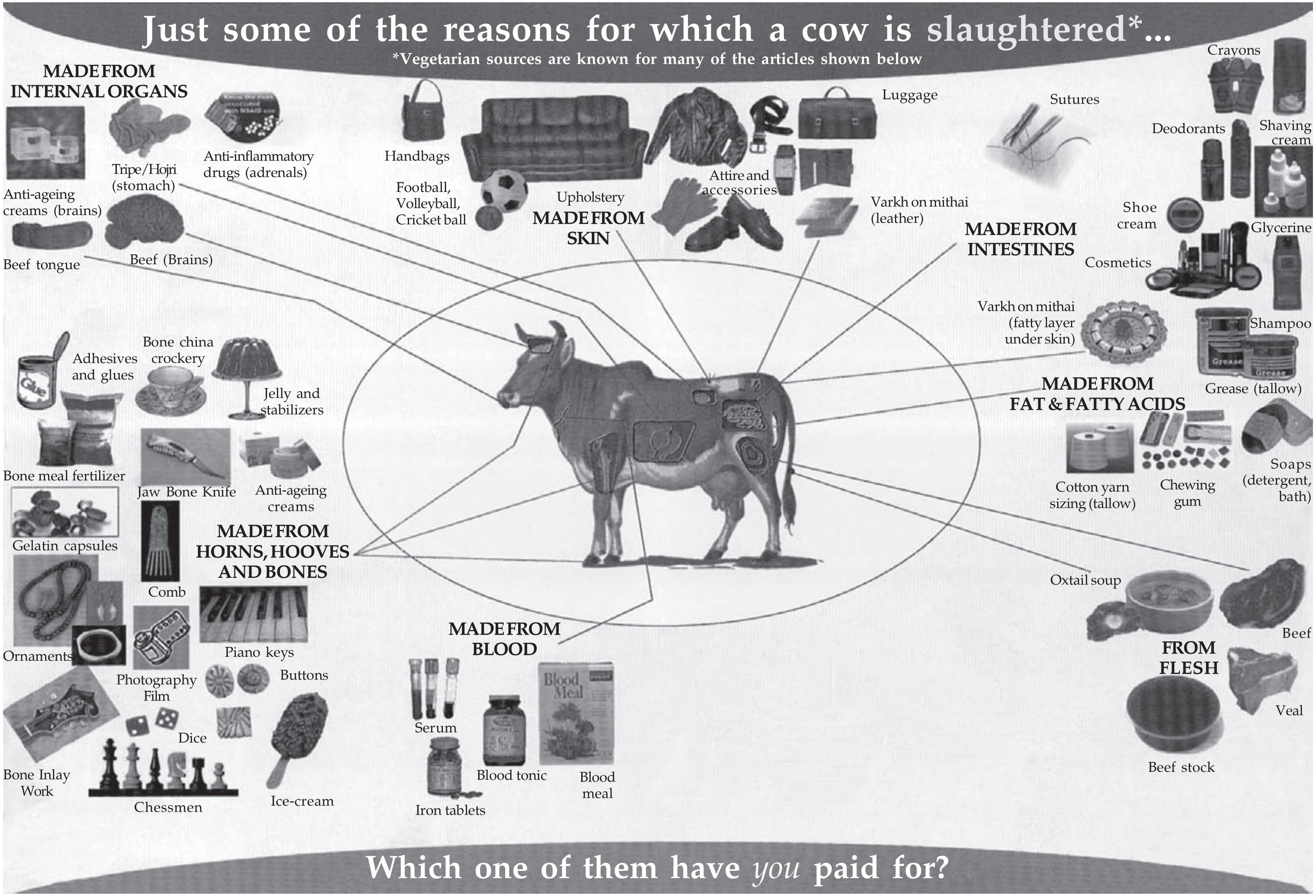
Just some of the reasons for which a cow is slaughtered*...
*Vegetarian sources are known for many of the articles shown below
MADE FROM INTERNAL ORGANS
Anti-ageing creams (brains)
Tripe/Hojri (stomach)
Anti-inflammatory drugs (adrenals)
Beef tongue
Beef (Brains)
Handbags
Football, Volleyball, Cricket ball
Upholstery
MADE FROM SKIN
Attire and accessories
Luggage
Varkh on mithai (leather)
Sutures
MADE FROM INTESTINES
Crayons
Deodorants
Shaving cream
Shoe cream
Glycerine
Cosmetics
Varkh on mithai (fatty layer under skin)
Shampoo
Grease (tallow)
MADE FROM FAT & FATTY ACIDS
Cotton yarn sizing (tallow)
Chewing gum
Soaps (detergent, bath)
Adhesives and glues
Bone china crockery
Jelly and stabilizers
Bone meal fertilizer
Jaw Bone Knife
Anti-ageing creams
Gelatin capsules
MADE FROM HORNS, HOOVES AND BONES
Comb
Ornaments
Piano keys
Photography Film
Buttons
Dice
Bone Inlay Work
Chessmen
Ice-cream
MADE FROM BLOOD
Serum
Blood tonic
Blood meal
Iron tablets
Oxtail soup
Beef
FROM FLESH
Veal
Beef stock
Which one of them have *you* paid for?

आपके पत्र

आज मैंने अपने आपको बड़ा सौभाग्यशाली समझा, जब मेरे हाथ में मेरी सबसे प्रिय पत्रिका प्राप्त हुई। हर बार न्यूजलेटर में मुनिश्री एवं आचार्यश्री के बारे में कुछ-कुछ प्रसंग अवश्य बताते थे। इस बार पत्रिका कुछ सूनी-सूनी लगी। पत्रिका में जो आपके पत्र नामक कॉलम है उसमें सभी पत्रों को प्रकाशित करना तो संभव नहीं है लेकिन कुछ पत्रों को प्रकाशित करने के बाद नीचे जिन लोगों के पत्र प्राप्त हुए हैं उनके सिर्फ नाम लिखे जा सकते हैं। जिससे पत्र भेजने वाले को यह मालूम हो जायेगा कि उसका पत्र आप तक पहुँच गया और आपने पढ़ा है।

- अर्चना जैन, अशोकनगर

आपके द्वारा भेजा गया Chirping Sparrow का अंक प्राप्त हुआ। अंक प्राप्त कर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आपके द्वारा भेजी गई इस पत्रिका से मुझे बहुत-सा ज्ञान व कई बातें सीखने को मिलीं। मुझे इस पत्रिका से बहुत लगाव है अतः हम चाहते हैं कि आप इसी तरह पत्रिका को भेजकर अनुगृहीत करते रहेंगे। मैं अपने साथ अपने दोस्तों को भी यह पत्रिका पढ़ने को देता हूँ। वे भी इस पत्रिका से ज्ञान की बातें सीखते हैं, परन्तु मैं चाहता हूँ कि इस पत्रिका में कैरियर से संबंधित कोई कॉलम दिया जाए, जैसे - एम.कॉम, बी.कॉम, एम.बी.एम., एलएल.बी., इत्यादि की पढ़ाई के लिए अच्छे विश्वविद्यालयों, तैयारी के लिए उपलब्ध कोचिंग किस शहर से अच्छा रहेगा, आदि जानकारी जहाँ तक संभव हो। मैं आशा व्यक्त करता हूँ कि इस प्रार्थना पर आप जरूर ध्यान देंगे।

- आकाश जैन, जबलपुर

जिस प्रकार एक चिड़िया जब आपके आँगन में आकर अपना सुरीला गीत सुनाकर आपकी समस्त परेशानियों का दूर कर देती है; उसी प्रकार आपका यह News Letter है। जब भी मुझे यह प्राप्त होता है मेरा मन प्रफुल्लित हो जाता है।

इसके माध्यम से हमारी समस्त शंकाओं एवं दुविधाओं का हल मिल जाता है। यह पत्रिका हमारे बौद्धिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि इसमें बहुत-सी जानकारियाँ भरी रहती हैं जिन्हें जानना हमें आवश्यक है।

यह एक संपूर्ण पत्रिका है जो हमारे व्यक्तित्व में निखार ला सकती है। इस पत्रिका का वह भाग मुझे सबसे अच्छा लगता है जिसमें धर्म और विज्ञान से जुड़ी गलतफहमियों को दूर किया जाता है।

इस पत्रिका के बारे में जितना लिखो कम है। मुनिश्री द्वारा इसे इस तरह से रचाया गया है कि एक विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सके। यह पत्रिका हमारे साथ-साथ हमसे जुड़े अन्य लोगों के लिये भी दिग्दर्शिका की तरह कार्य करती है जिसकी हमें आज बहुत जरूरत है।

- महिमा जैन, शाहपुर (सागर, म.प्र.)

Chirping Sparrow एक ऐसी 'महान पत्रिका' है जिसे पढ़कर मुझे अपार हर्ष की प्राप्ति होती है। प्रत्येक तीन महीने में जब यह महान पत्रिका मुझे मिलती है तो ऐसा लगता है कि मुनिश्री का आशीर्वाद मुझे मिल गया हो। मुझे अपने आप पर गर्व होता है कि मुझे यह सम्मान (यंग जैना अवार्ड) मिला। आज भी जब इस सम्मान का 'स्मृति चिन्ह' (Chirping Sparrow) मुझे मिलता है तो मैं पुलकित हो उठती हूँ। यह 'महान पत्रिका' हमें हमारे जैन सिद्धान्तों की याद दिलाकर हमें हमारे जैनत्व का ज्ञान कराती है। इसके बारे में शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इसके बारे में तो जितना लिखा जाए उतना ही कम है। इतने कम पृष्ठों में इतनी ज्ञान की बातें जानकर मुझे आश्चर्य होता है। इसे पढ़कर मुझे 'गागर में सागर भरना' कहावत याद आती है। - प्रियंका जैन, चन्देरी

मैं Chirping Sparrow नियमित पढ़ता हूँ। मेरा एक सुझाव है, कि आप इसमें महाराज जी का प्रवचन भी प्रकाशित करें। ताकि जैन समाज के बच्चों का सामान्य ज्ञान के साथ-साथ कुछ धार्मिक ज्ञान भी बढ़े। और बच्चों को जैन धर्म की सूक्ष्मता, धर्म का जीवन में प्रभाव आदि की जानकारी भी मिले एवं बच्चों में धर्म के प्रति अनुराग बढ़े।

- प्रेरक एस.शाह, अहमदाबाद

Chirping Sparrow के अंक नियमित मिलने से मन गद्‌गद हो उठता है। पिछले अंक में 'इफ' कविता मन को अंदर तक छू गई। जैनेटिकल-इंजीनियरिंग और कर्म सिद्धांत लेख बहुतसी जानकारियों से युक्त है। मुझे बहुत सारी बातें नहीं मालूम थीं जो इस लेख से मिलीं। 'आपके प्रश्न' व उत्तर एक शानदार प्रयास है, काफी लोग समाधान पाते हैं। कई बार एक शब्द भी नई दिशा दे देता है।

मुनि क्षमासागर की कविता के क्या पूछने - उनकी कविताओं में अध्यात्म, दर्शन, चिंतन झलकता है। थोड़े शब्दों में इतनी बड़ी बात कह देना अपने आप में बहुत बड़ी बात है, हर कविता में बहुत गहराई होती है जो सोचने पर मजबूर तो करती ही है दिशा देने का कार्य भी करती है। कुलदीप कुमार बबेले की कहानी अच्छी है। निशांत जैन, 'निश्चल' अंकिता पाटनी, सौरभ जैन की कवितायें भी अपनी जगह ठीक हैं। कुल मिलाकर पत्रिका ज्ञानवर्धक व विविधताएँ लिए हुए रहती है।

- राजेन्द्र पटोरिया, नागपुर

पत्र आये :

सोनल पोरवाल, मंदसौर; अपेक्षा जैन, सागर; अनुभा जैन, देवरी; दीपश्री जैन, मनासा; सौरभ जैन, भिलाई; अविनाश आग्रेकर, अमरावती अमित जैन, गोरेगांव; विशाल जैन, छिंदवाड़ा; गौरव जैन, कोटा; चार्मी पारिख, जूनागढ़; अंजलि जैन, अजयगढ़; प्रियंका जैन, थाणे चिन्मय जैन, MP 56054; के.एस. दिव्या, मैसूर; एकान्त पलांदी, दमोह, अभिषेक जैन, ललितपुर; अरिहंत टोंग्या, कोटा

YOUR SPACE

व्यंग्य क्षणिकायें

विकल्प
हम प्रगति की
ऊँचाइयों को
छू रहे हैं
दूध की जगह दारु पी रहे हैं।

अजायबघर
मैं एक मित्र के घर गया
उन्होंने बतलाया वे लायन क्लब
के लायन हो गये हैं
पत्नी लायनेस हो गई है
बच्चा लियो हो गया है
मुझे लगा उनका पूरा घर
चिड़ियाघर हो गया है।

गांधी
गांधी पहले तुम हजार के नोट पर दिखते थे
फिर पाँच सौ के नोटों पर दिख रहे हो
अब तो आप दस-पाँच के नोटों पर भी आ गये
कुछ दिनों बाद ये तुम्हें चवन्नी-अठन्नी में
ले आयेंगे
तुम कहाँ थे, कहाँ आ गये
लोग देखते रह जायेंगे।

राजेन्द्र पटोरिया, नागपुर

Lord's Image

The rising of the sun
the shining of the moon
the calmness of the night
and brightness of the noon
the flowers that bloom
and pearl like drops of dew
tells us something special
and gives us a clue
a clue of the image
of our beloved creator
Whose creations speak a lot
though there is no narrator
whose soothing light enlightens
our soul
and in darkness show us the road.
I remember the thing that is ofter
told
God's pure heart is of 24-carat
gold

- **Ankita Patni,** Ajmer (Raj.)

Principles of Life

If you want to learn,
Learn manners
If you want to talk
talk gently
If you want to see,
See yourself
If you want to avoid
Avoid violence
If you want to bow
Bow to the almighty
If you want to cultivate
Cultivate culture
If you want to kill,
Kill anger
If you want to fight
Fight for peace

- **Priyanka Kasliwal** Sikar (Rajasthan)

आपकी कृतियाँ भी मिलीं

निशांत जैन, सतना; प्रतीक्षा जैन, चिरगाँव; नेहा जैन, प्रियंका जैन, मेघा जैन, शाडोरा; रूपम जैन, बंडा; साक्षी समैया, सागर; नेहा बाकलीवाल, नेहा जैन, कोटा; सिलकी काला, खातेगाँव; विनीता चौधरी, जबलपुर; अंशुल जैन, सागर

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

खिड़की

गंभीर रूप से बीमार दो व्यक्ति अस्पताल के एक ही कमरे में साथ-साथ भर्ती थे। उनमें से एक को फेफड़ों से पानी निकालने के लिए दिन में एक घंटा बैठने की इजाजत थी। उसका पलंग खिड़की के पास था। जबकि दूसरा पूरे दिन पीठ के सहारे लेटा रहता था। वे दोनों पत्नी, परिवार, घर, नौकरी, सेना में अपना सहयोग और छुट्टियों के बारे में बातें करते थे। खिड़की के पास वाला व्यक्ति हर दोपहर अपने साथी के लिए बाहर के दृश्यों का वर्णन किया करता था। दूसरा बाहरी दुनिया की गतिविधियों और रंगों की बातें सुनकर अपनी आँखें बंद करके उन दृश्यों की कल्पना करता था। एक दोपहर जब खिड़की के पास वाला व्यक्ति बाहर से गुजरने वाली परेड का वर्णन कर रहा था तो दूसरे के दिमाग में ख्याल आया कि ऐसा क्यों है कि अकेला यही सब कुछ देखकर खुश होता है और मैं कुछ भी नहीं देख सकता ? दिन गुजरते गए। एक रात खिड़की के पास वाले व्यक्ति की तबियत बहुत बिगड़ी। वो मदद के लिए चिल्ला रहा था। लेकिन उसके साथ वाला व्यक्ति चुपचाप उसे धुँधली रोशनी में देखता रहा। उसने उसे मदद करने की कोई कोशिश नहीं की। पाँच मिनिट बाद शांति हो गई। उसकी मृत्यु हो चुकी थी। उसने अस्पताल के नौकर को बुलाया और बिना शोर और खलबली के शव को ले जाने को कहा। मौका पाकर दूसरे व्यक्ति ने नर्स को उसका पलंग खिड़की के पास लगा देने को कहा। नर्स ने उसे खिड़की के पास खिसका दिया। उसे आराम से छोड़कर वह चली गई। उसके जाने के बाद दर्द के साथ धीरे-धीरे कोहनी का सहारा लेकर वह व्यक्ति खुद को उठाने की कोशिश करने लगा। वो बहुत खुशी महसूस कर रहा था कि अब वो उन दृश्यों का मजा ले सकेगा। उसने दृश्य देखने के लिए खिड़की से बाहर देखा तो सामने सिर्फ एक दीवार थी।

Publisher : Maitree Jankalyan Samiti, 1/205, Professor Colony, Agra-282 002 • *Printed at :* Jaipur Printers, Opp. Indian Coffee House, M. I. Road, Jaipur-302 001